12

उत्तररामचरित-प्रस्तावना

इस ग्रन्थ में हम नाटक के प्रथम अंक के कुछ अंगों को पढ़ेंगे। सर्वप्रथम सूत्रधार और नट मंच पर आकर नाटक की प्रस्तावना करते हैं। राम जनक के विरह से खिन्न सीता को सान्त्वना देने के लिए सिंहासन से उठकर अन्त:पुर में जाते हैं। उसके बाद अष्टावक्र आकर उनके कुशल समाचार को पूछते हैं और वशिष्ठादि गुरुजनों द्वारा राम के लिए जो उपदेश दिये गये थे, वे सब राम को सुनाते हैं। उसके बाद लक्ष्मण आकर कहते हैं कि रामचरितात्मकचित्र के लिए जैसा आदेश दिया था वैसा ही अंकन करके आए हैं। उसके बाद राम सीता के विनोद के लिए उस चित्रपट को सीता के लिए प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार चित्रदर्शन पर्व आरम्भ होता है। उसमें ताडकाराक्षसीवध से आरम्भ करके राम सीता के विवाह, वनवासगमन, शृंगवेरपुरम्, इस प्रकार के घटनाक्रम से विन्ध्यारण्य का चित्र आ जाता है। अन्त में राम के मुख से गोदावरी के तट पर उनके जीवन पद्धति के वर्णन से ग्रन्थ समाप्ति होती है।

इस पाठ में हम उत्तररामचरित नाटक की प्रस्तावना को पढ़ते हैं। यहाँ सात श्लोक और कुछ उक्तियां है। सर्वप्रथम सूत्रधार आकर कवि भवभूति का वर्णन करता है। वहीं पर सूत्रधार अयोध्यावासी रहे नट से मिलता है। उसके बाद नट और सूत्रधार के मध्य में अयोध्या के विषय में सुदीर्घ वार्तालाप चलता है। उस वार्तालाप के प्रसंग से ही नाटक का आरम्भ होता है। यह सब इस पाठ को पढ़कर ही जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढकर आप सक्षम होंगे :

- श्रीराम और सीता के चरित्र को जान पाने में;

टिप्पणी

- नाटक में सूत्रधार और नट के विषय में जान पाने में;
- नान्दीपाठ के विषय को जान पाने में;
- छन्दों के लक्ष्णों को जान पाने में;
- श्लोकों के अन्वय और प्रतिपदार्थ आदि को समझ पाने में और;
- दीर्घपदों के विग्रह वाक्य और समास को समझ पाने में।

12.1 मूलपाठ

इदं कविभ्यः पूर्वभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
विन्देमहि च तां वाणीममृतामात्मनः कलाम्॥1॥
(नान्द्यन्ते)

सूत्रधारः- अलमतिविस्तरेण। अद्य खलु भगवतः कालप्रियानाथस्य यात्रायामार्यमिश्रान् विज्ञापयामि। एवमत्रभवन्तो विदांकुर्वन्तु। अस्ति खलु तत्रभवान् काश्यपः श्रीकण्ठपदलाञ्छनः पदवाक्यप्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम जातूकर्णीपुत्रः।

यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्यैवान्ववर्तत।
उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयोक्ष्यते॥2।

सूत्रधारः- एषोऽस्मि कावशादायोध्यकस्तदानींतनश्च संवृत्तः (समन्तादवलोक्य) भोः भोः!यदा तावदत्रभवतः पौलस्त्यकुलधूमकेतोः महाराजरामस्यायं पट्टाभिषेकसमयो रात्रिन्दिवमसंहृतानन्दनान्दीकः, त्किमिदानीं विश्रान्तचारणानि चत्वरस्थानानि?

(प्रविश्य)

नटः- भाव! प्रेषिता हि स्वगृहान्महाराजेन लङ्ढासमरसुहृदो महात्मानः प्लवङ्गमराक्षसाःसभाजनो पस्थायिनश्च नानादिगन्तपावना बह्मर्षयों राजर्षयश्च, यत्समाराधनायैतावतों दिवसान् प्रमोद आसीत्।

सूत्रधारः

आ, अस्त्येतन्निमित्तम्।

नटः

अन्यच्च

वसिष्ठाधिष्ठिता देव्यो गता रामस्य मातरः।
अरुन्धातीं पुरस्कृत्य यज्ञे जामातुराश्रमम्॥3॥

सूत्रधारः

वैदशिकोऽस्मीति पृच्छामि। कः पुनर्जामाता?

टिप्पणी

कन्यांदशरथोराजा शान्तां नाम व्यजीजनत्।
अपत्यकृतिकांराज्ञेरोमपादाय तां ददौ।।4।।

विभाण्डकसुतस्तामृष्यश्रृ उपयेमे। तेन द्वादशवार्षिकं सत्रमारब्धम्। तदनुरोधात्कठोरगर्भा - मपि जानकीं विमुच्य गुरुजनस्तत्र यातः।

सूत्रधारः

तत्किमनेन? एहि राजद्वारमेव स्वजातिसमयेनोपनिष्ठावः।

नटः

तेन हि निरूपयतु राज्ञः सुपरिशुद्धामुपस्थानस्तोपद्धतिं भावः।

सूत्रधारः

मारिष,

सर्वथा व्यवहर्तव्यं कुतो ह्यवचनीयता।
यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः।।5।।

नटः

अतिदुर्जन इति वक्तव्यम्।

देव्यामपि हि वैदेह्यां सापवादो यतो जनः।
रक्षोगृहस्थितिर्मूलमग्निशुद्धौ त्वनिश्चयः।।6।।

सूत्रधारः

यदि पुनरियं किंवदन्ती महाराज प्रतिस्यन्देत ततः कष्टं स्यात्।

नटः

सर्वथा ऋषयों देवाश्च श्रेयो विधास्यन्ति। (परिक्रम्य) भो भोः क्वेदानीं महाराजः?

(आकर्ण्य) एवं जनाः कथयन्ति -

स्नेहात्सभाजयितुमेत्य दिनान्यमूनि
नीत्वोत्सवेनजनकोऽद्य गतोविदेहान्।

देव्यास्ततो विमनसः परिसान्त्वनाय
धर्मासनाद्विशति वासगृहं नेरन्द्रः ।।7।।

टिप्पणी

(इति निष्क्रान्तौ)

(इति प्रस्तावना)

12.2 मूलपाठ

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
विन्देमहि तां वाचममृतामात्मनः कलाम्।।8।।

अन्वयः

पूर्वेभ्यः कविभ्यः इदं नमोवाकं प्रशास्महे, आत्मनः अमृतां कलां देवतां वाचं विन्देम।

अन्वयार्थः- पूर्वभ्यः- प्राचीन, कविभ्यः- व्यास, वाल्मीकि, कालिदास आदि कवियों के लिए, नमोवाकम्- नमस्कार, इदम्- यह मंगलाचरणात्मक, प्रशास्महे- निर्देश कराता हूँ। आत्मनः- परमात्मका की, अमृताम्- नित्य, कलाम्- अंशभूत, देवताम्- देवी, वाचम्- वाणी सरस्वती को, विन्देम - प्राप्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

व्याख्या- रंग में विघ्नों के नाश के लिए रंग के आदि में मंगल आचारणीय होता है। उसे ही मंगल को नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' नाम से कहा जाता है। अतः महाकवि भवभूति भी काव्य के आदि में प्रस्तुत श्लोक से नान्दी करते हैं। इस श्लोक में मंगलाचरण आशीर्वादात्मक है। यहाँ पूववर्ती व्यास-वाल्मीकि आदि कवियों को कवि भवभूति 'नमः' शब्द का उच्चारण करके स्तुति करते हैं। उनके प्रसाद से भगवान ब्रह्मा की अंशभूता वाणी की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती अभीष्ट होती है। इस प्रकार पूर्वकवि स्मरण किये गये वन्दन का फल वाग्देवी का लाभ है अर्थात् वाक् यथा समय यथार्थ को स्फुरत करें, यह कवि का आशय है।

विशेष टिप्पणी- यहां महाकवि भवभूति उत्तररामचरित रूप नाटक को रचना की इच्छा से प्रारम्भ में विघ्नों के नाश के लिए और ग्रन्थ की परिसमाप्ति के लिए शिष्टाचार की पालन में मंगलाचरण विधान करता है। इस श्लोक से विधान करता है कि शिष्ट आचरण अनुमित श्रुतिबोधित कर्तव्यता मंगलाचरण होता है। वह आशीर्वादात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक, और नमस्कारात्मक होता है। यहां नमस्कारात्मक मंगलाचरण का विधान करते हैं।

यहां मंगल श्लोक नान्दी है। नन्दयति आनन्दयति जनान् इति नान्दी। अर्थात् जो लोगों को आनन्दित करता है। वह नान्दी है। नाटक में मंगल के लिए पहले श्लोक या पद्य को नान्दी कहते हैं। विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण में उसका लक्षण दिया है।-

आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता।।

टिप्पणी

माङ्गल्यशङ्खचन्द्राब्जकोककैरवशंसिनी।
पदैर्युक्ता द्वादशभिरष्टाभिर्वा पर्दरुत।।

अर्थात् देवब्राह्मण और राजाओं के आशीर्वचन युक्त स्तुति जहां होती है। वह नान्दी कही जाती है। वह नान्दी बारहपद या आठपद वाली होती है। यहाँ बारह पद वाली नान्दी है।

व्याकरणविमर्श:-

1. **नमोवाकम्**- वच्धातो: क्विप्प्रत्यये वाक् इति रूपम्। तस्य वचनम् इत्यर्थ:। नम: वाक: यस्मिन् स इति नमोवाक् इति बहुव्रीहिसमास:, तं नमोवाकम्।
2. **प्रशास्महे**- प्रपूर्वकात् इच्छार्थकात् शारूधाातो: उत्तमपुरुषैकवचने रूपम्। प्रशास्महे इत्यस्य निर्दिशाम: इत्यर्थ:।
3. **विन्देम** - तौदादिकात् विद्-धातो: विधिलिङ्- उत्तमपुरूषैकवचे विन्देम इति रूपम्।
4. **अमृताम्** - अविद्यमानं मृतं मरणं यस्या: सा अमृता इति बहुव्रीहिसमास:, ताम् अमृताम्

छन्द:- इस श्लोक में अनुष्टुप्-छन्द: है।

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पचंमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययो:।।

एक श्लोक में चार पाद होते हैं। अनुष्टुप छन्द में प्रत्येक पाद का षष्ठ अक्षर गुरु होता है। पंचम अक्षर लघु होता है। दूसरे और चौथे पाद में सप्तम अक्षर ह्रस्व होता है। पहले और तीसरे पाद में दीर्घ होता है।

पाठगत प्रश्न-12.1

1. कवि की क्या इच्छा है?
2. अनुष्टुपछन्द का लक्षण लिखिए।
3. 'नमोवाकम्' को सिद्ध कीजिए।

12.3 मूलपाठ

सूत्रधार:-

अलमतिविस्तरेण। अद्य खलु भगवत: कालप्रियानाथस्य यात्रायामार्यमिश्रान् विज्ञापयामि। एवम=भवन्तो विदांकुर्वन्तु। अस्ति खलु तत्रभवान् काश्यप: श्रीकण्ठपदलाञ्छन: पदवाक्यप्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम जातूकर्णीपुत्र:।

अन्वयार्थ:- मंगलाचरणस्यान्ते - मंगलाचरण के अन्त में, अलं - पर्याप्त, अतिविस्तारेण -

अधिक विस्तार से, अद्य - इस दिन में, खलु - निश्चय ही, भगवत - सर्वेश्वर्यविभूषित की, कालप्रिय नाथस्य - दुर्गावल्लभ शिव की, यात्रायाम् -महोत्सव में, आर्य मिश्रान् - आर्यो को आदरणीयों को, मिश्रान् - बहुशास्त्र पठितों अर्थात् गौरवितों को, विज्ञापयामि - सविनय निवेदन करता हूँ। एवम् - इस प्रकार यहां आपको यहां उपस्थित पूज्य आपको, विदांकुर्वन्तु - जाने। तत्रभवान् - यहां उपस्थित पूज्य श्रीमान्, काश्यप - काश्यप गोत्रोत्पन्नः, श्रीकण्ठपदलांछनः - श्रीकण्ठ नाम वाले, पदवाक्य प्रमाणज्ञः - व्याकरण मीमांसा न्याय शास्त्रज्ञ, भवभूतिर्नाम - भवभूति नाम वाले, जातूकर्णीपुत्र - जतुकर्णी गोत्र में पैदा हुई स्त्री के पुत्र हैं।

व्याख्याः- नान्दी के अन्त में सूत्रधार बोला है कि अधिक विस्तार मत करो। उसके बाद भगवान् शिव के उत्सव के उपलक्ष्य में उपस्थित सभ्य कवि भवभूति के विषय में सविनय निवेदन करते हैं। वे कहते है। कि कवि भवभूति काश्यपगोत्र उत्पन्न हैं। श्रीकण्ठ इनका दूसरा नाम है। व्याकरण न्याय और मीमांसा में वे अत्यन्त निष्णात है। वे जातुकर्णी के पुत्र भवभूति है।

विशेष टिप्पणी -''नान्द्यन्ते प्रविशति सूत्रधारः'' अर्थात् नान्दीपाठ के बाद में ही सूत्रधार का प्रवेश होता है। सूत्रं अर्थात् नाटक प्रयोग के अनुष्ठान को धारण करता है। अतः वह सूत्रधार है। साहित्यदर्पण में सूत्रधार का लक्षण कहा गया है।

नाटयोपकरणादीनि सूत्रमित्यभिधीयते।
सूत्रं धारयतीत्यर्थे सूत्रधारो निगद्यते॥

व्याकरणविमर्श

1. **विदांकुर्वन्तु** - ज्ञानार्थकात् विद्धातोः लोटि कृधातोः अनुप्रयोग प्रथमपुरुषबहुवचने रूपम्। जानन्तु इति तदर्थः।
2. **श्रीकण्ठपदलांछनः**-श्रीकण्ठ इति पदं लांछनं यस्य स इति श्रीकण्ठपदलांछनः श्रीकण्ठपदनामकः इत्यर्थः।
3. **पदवाक्यप्रमाणज्ञः** -जानाति इति ज्ञः। पदं (व्याकरणम्) च वाक्यं (न्यायः) प्रमाणं (मीमांसा) च इति पदवाक्यप्रमाणानि, तेषां ज्ञः इति पदवाक्यप्रमाणज्ञः।
4. **कालप्रियानाथस्य** -कालस्य प्रिया कालप्रिया इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। दुर्गा इत्यर्थः। तस्याः नाथः कालप्रियानाथः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तस्य।
5. **आर्यमिश्रान्** -आर्याः च अमी मिश्राः च आर्यमिश्राः इति कर्मधारयसमासः, तान् आर्यमिश्रान्।
6. **जातूकर्णीपु**=:- जतूकर्णस्य गोत्रापत्यं स्त्री जातूकर्णी। तस्याः पुत्रः जातूकर्णीपु=: इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

पाठगत प्रश्न 12.2

4. सूत्रधार आर्यो को कब निवेदन करते हैं?

टिप्पणी

5. भवभूति कैसे थे?

6. पदवाक्यप्रमाणज्ञः की व्युत्पत्ति लिखें?

12.4 मूलपाठ

यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्ववश्यैवानुवर्तते।
उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयोक्ष्यते॥

अन्वय- यं ब्रह्माणम् इयं देवी वाक् वश्या इव अनुवर्तते। तत्प्रणीतम् उत्तररामचरितं प्रयोक्ष्यते।

अन्वयार्थः- यम् -भवभूति को, ब्रह्मणम् - यज्ञनादि षट् कर्म में लगे हुए ब्राह्मण को, इयम् देवी - यह देवी भगवती, वाक् - वाणी सरस्वती, वश्या इव अधीन स्त्री के समान, अनुवर्तते - अनुसरण करती हैं। तत्प्रणीतम् - भवभूती शरा रचित, उत्तररामचरितम् - उत्तररामचरित नामक नाटक को, प्रयोक्ष्यते - अभिनीत किया जायेगा।

व्याख्या- यहां सूत्रधार के मुख से कवि सुन्दर वर्णन करता है। जैसे एक पुरुष के वशीभूत स्त्री उस पुरुष का निरन्तर अनुसरण करती है। उस पुरुष द्वारा जो कुछ कहा जाए वह सब वह नारी सम्पादित करती है। इसी प्रकार वाक् देवी हंसवाहिनी सरस्वती भी कवि भवभूति का सतत अनुसरण करती है। अतः कवि जैसी इच्छा करते है। वैसा ही वाक्य द्वारा मनोगत भाव प्रकट करने में समर्थ होते है। इससे इस नाटक की असाधारणता प्रकाशित होती है। यहां कवि द्वारा नाटक का नाम उत्तररामचरित का उल्लेख किया गया है। उत्तर नाम राज्याभिषेक के बाद का और रामचरित पुरुषोत्तम श्रीराम का चरित्र है। रावणवध के बाद वनवास समाप्त करके जब राम वापस लौट आये तब राम का राज्याभिषेक हुआ। उसके बाद के श्रीराम के चरित अर्थात् जीवन वृतान्त इस नाटक में वर्णित है। उसी का इस नाटक में अभिनय प्रस्तुत किया जा रहा है। यह उद्घोष सूत्रधार ने किया।

विशेष टिप्पणी

यहां प्ररोचना प्रस्तुत है। उसका लक्षण है-

''निवेदन प्रयोज्यस्य निर्देशो देशकालयोः।
कविकाव्यादीनां प्रशंसा तु प्ररोचना॥

यहां संस्कृत में भाषण करने के कारण भारतीवृत्ति है। जिसका लक्षण है -

''भारती संस्कृतप्रायो वाग्व्यापारो नटाश्रयः।''

व्याकाणविमर्शः-

1. वश्या- वश्धातोः यति टापि वश्या इति रूपम्। वशंगता इत्यर्थः।

2. प्रणीतम्- प्रपूर्वकात् नीधातोः क्तप्रत्यये नपुंसकलिङगे प्रथमैकवचने रूपम्।

3. प्रयोक्ष्यते- प्रपूर्वकात् युज्धातोः लृटि प्रथमपुरुषैकवचने रूपम्

4. रामचरितम्- रामस्य चरितं राचरितम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

5. तत्प्रणीतम्- तेन प्रणीतं तत्प्रणीतम् इति तृतीयातत्पुरुषसमासः।

सन्धिविच्छेद

वाग्वश्येवानुवर्तते- वाक् + वश्या + इव + अनुवर्तते।

अलंकरविमर्श- वश्येव से यहां क्रियोत्प्रेक्षण होने से उत्प्रेक्षालंकार है। उसका लक्षण है -'' भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।'' इति।

छन्दः- इस श्लोक में अनुष्टुप छन्द है।

पाठगत प्रश्न 12.3

7. इस नाटक का नाम क्या है?

8. वाग्वश्येवानुवर्तते'' सन्धि विच्छेद कीजिए।

9. इस नाटक की रचना किसने की।?

10. ग्रन्थकर्ता का वैशिष्ट्य कैसा है?

12.5 मूलपाठ

सूत्रधारः -एषोऽस्मि कविवशादायोध्यकस्तदानींतनश्च संवृत्तः (समन्तादवलोक्य) भो भो ! यदा तावदत्रभवतः पौलस्त्यकुलधूमकेतोः महाराजरामस्यायं पट्टाभिषेकसमयो रात्रिन्दिवमसेहतानन्दनान्दीकः, तत्किमिदानीं विश्रान्तचारणानि चत्वरस्थानानि?

(प्रविश्य)

नटः- भाव! प्रेषिता हि स्वगृहान्महाराजेन लंकासमरसुहृदो महात्मानः प्लवंगामराक्षसाः सभाजनोपस्थायिनश्च नानादिगन्तपावना ब्रह्मार्षयो राजर्षयश्च, यत्समाराध्नायैतावता दिवसान् प्रमोद आसीत्।

सूत्रधारः- आ, आस्त्येतन्निमित्तम्।

अन्वयार्थ

सूत्रधारः- एषः- मैं सूत्रधार, कार्यवशात् - अभिनयदि कार्य के कारण से, अयोध्यकः -अयोध्या वासी, तदानीन्तनः - रामकालीन, सवृतः - हो गया, अस्मि - हूं। (समन्तात् -लगातार, परितः चारो ओर, अवलोक्य - देखकर) भो भो - हे नट, अत्र भवतः - पूज्य के, पौलस्त्य कुल धूमकेतोः - रावण के वंश को नष्ट करने वाले राम के, पट्टाभिषेक समयः

-राज्याभिषेक के समय, रात्रिन्दिवम् -रातदिन, असंहृतानन्दनान्दीकः -निरन्तर आन्दन देने वाली नान्दी है जिसमें, तत्किम् - वह कैसे, इदानीम् - इस समय, विश्रान्तचारणानि - विश्रान्त हो गये है चारण या नट जिसके उसमें, चत्वरस्थानानि-चौराहे,

प्रविश्य-प्रवेश करके।

नटः- भाव हे विद्वन् सूत्रधार, स्वग्रहात् - अपने घर से, महाराजेन - श्रीराम महाराज द्वारा, प्रेषिता - प्रस्थापित किये गये, लंका समरसुहृदः - राम रावण का लंका में घटित जो युद्ध हुआ वहां जो मित्र थे वे लंका समर सुहृद कहलाये, महात्मानः -महान लोग, प्लवंगमराक्षसाः - सुग्रीव आदि वानर व विभीषण आदि राक्षस, नानादिगन्तपावना - नानादिशाओं को पवित्रीकृत, ब्रह्मर्षयः - ब्रह्मकुलोत्पन्न गौतम आदि ऋषि, राजर्षयः - क्षत्रियकुलोत्पन्न जनक आदि ऋषि, सभा जनोपस्थायिनः - राम के अभिनन्दन करने के लिए आये हुए जन, यत्समाराधनाय - जिनके सत्कार के लिए, एतावतः -इतने, दिवसान् - दिनों को व्यतीत करके, प्रमोदः - आनन्दोत्सव, आसीत् - था।

सूत्रधारः - आ, ठीक है, तो, एतत् - यह, निःशब्दता का, निमित्तम्-कारण, अस्ति -है।

व्याख्या- अब सूत्रधार नाट्य के प्रसंग में एक अयोध्यावासी से मिलता है। उसके बाद वह लगातार देखकर प्रसंग का निर्देश करता है- अरे यह तो अयोध्यापति श्रीमान् रामचन्द्र के राज्याभिषेक का समय है। तो रंगशाला के प्रांगण में स्तावक स्तुतिपाठ से कैसे रुक गये। उसके बाद नट सूत्रधार को सम्बोधन करके निःशब्दता के कारण को जानकर कहते हैं कि उत्सव समाप्त हो गया। अतः रावण के साथ युद्ध में वानर अपने पराक्रम को प्रदर्शित करके युद्ध किया वे राम सुहृदवानर उत्सव के लिए उपस्थित हुए थे। इस समय उत्सव समाप्त हो गया। अतः वे अपने देश को गये। अनेक देशों से आये वशिष्ठादि ब्रह्मार्षि, जनकादि राजर्षि भी अपने देश को गये। इस प्रकार सूत्रधार नीरव के कारण को जानता है।

व्याकरणविमर्शः

1. **संवृत्तः** - समित्युपसर्गपूर्वकात् वृद्धातोः क्तप्रत्यये रूपम्।
2. **पौलस्त्यकुलधूमकेतोः** - पौलस्त्यस्य कुलं पौलस्त्यकुलम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। तस्य धूमकेतुः इव इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तस्य।
3. **पट्टाभिषेकस्य समयः** पट्टाभिषेकसमयः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।
4. **रात्रिन्दिवम्**- रात्रो च दिवा च रात्रिन्दिवम् इति समाहारद्वन्द्वसमासः।
5. **विश्रान्तचारणानि**- विश्रान्ताः चारणाः येभ्यः येषु वा तानि विश्रान्तचारणानि इति बहुव्रीहिसमासः।
6. **लंकासमारसुहृदः**- लंकायां वृत्तः समरः लंकासमरः। तस्मिन् सुहृदः लंकासमरसुहृदः।
7. **नानादिगन्तपावनाः** - नाना दिशः नानादिशः इति कर्मधारयसमासः। नानादिशाम् अन्ताः नानादिगन्ताः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। तान् पावयन्ति इति नानादिगन्तपावनाः।

पाठगत प्रश्न 12.4

11. रामराज्याभिषेक के लिए कौन-कौन आये?

12. वे कैसे अयोध्या में आये?

13. अयोध्या में निःशब्दता का क्या कारण है?

14. पट्टाभिषेकसमय में समास बताएँ?

15. कौन आयोध्यकः हो गये?

12.6 मूलपाठ

अन्यच्च-

वसिष्ठाधिष्ठिता देव्यो गता रामस्य मातरः।
अरुन्धतीं पुरस्कृत्य यज्ञे जामातुराश्रमम्॥3

अन्वयः-अन्यच्च, विसिष्ठाधिष्ठिता देव्यः रामस्य मातरः अरुन्धतीं पुरस्कृत्य यज्ञे जामातुः आश्रमं गताः।

अन्वयार्थः

नटः - नट-अन्यत् -दूसरा भी, च -और कारण है।

वशिष्ठाधिष्ठिताः -कुलगुरु वशिष्ठ द्वारा संरक्षित, देव्यः - दशरथ की रानियां कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा, रामस्य - रामचन्द्र की, मातरः -जननी ,अरुन्धतीम् - गुरु पत्नी को, पुरस्कृत्य -आगे करके, यज्ञे - यज्ञ के लिए, जामातुः -कन्यापति ऋष्यशृंग के, आश्रमम् -तपःस्थल को, गताः -प्राप्त हुए।

व्याख्या- इस श्लोक में अयोध्या में गीतवाद्य आदि के अभाव को दूसरा कारण नट कहता है। महाराज दशरथ की एक कन्या थी। उस का नाम शान्ता था। शान्ता महामुनि ऋष्यशृंग को परिणीत हुई। उस जामाता ऋष्यशृंग के आश्रम में कोई यज्ञ चल रहा था। अतः यज्ञदर्शन के लिए दशरथ की रानियां श्रीराम की माताएं - कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा, वहां गई। अतः वे अयोध्या में नहीं है इस कारण भी गीतवाद्य आदि नहीं हो रहा है।

व्याकरणविमर्श

1. **वसिष्ठाधिष्ठिताः** - अधिपर्वकात् स्थाधातोः क्तप्रत्यये टापि अधिष्ठाता इति रूपम्। वसिष्ठेन अधिष्ठिता वसिष्ठाधिष्ठिता इति तृतीयातत्पुरुषसमासः।

2. **पुरस्कृत्य**- पुरस् इति पूर्वकात् कृधातोः क्त्वाप्रत्यये क्त्वाप्रत्ययस्य स्थाने ल्यपि पुरस्कृत्य इति रूपम्।

टिप्पणी

सन्धिविच्छेद 1. देव्यो गता रामस्य - देव्यः +गताः+रामस्य।

2. जामातुराश्रमम् - जामातुः+ आश्रमम्।

छन्दः- इस श्लोक में अनुष्टुप छन्द है।

पाठगत प्रश्न 12.5

16. राम की माताएं कहां और किस लिए गई?

17. किस को आगे करके राम की माताएं गई?

12.7 मूलपाठ

सूत्रधार

वैदेशिकोऽस्मीति पृच्छामि। कः पुनर्जामाता?

कन्यां दशरथो राजा शान्तां नाम व्यजीजनत्।
अपत्यकृतिकां राज्ञे रोमपादाय तां ददौ।।4।।

विभाण्डकसुतस्तामृष्यशृंग उपयेमे। तेन द्वादशवार्षिकं सत्रमारब्धम्। तदनुरोधात्कठोरगर्भामपि जानकीं विमुच्य गुरुजनस्तत्र यातः।

अन्वय

सूत्रधारः- वैदेशिकः अस्मि इति पृच्छामि। कः पुनः जामाता।

नटः- राजा दशरथः शान्तां नाम कन्यां व्यजीजनत् राज्ञे रोमपादाय अपत्यकृतिकां तां ददौ।

विभाण्डकसुतः ऋष्यशृङ्गः ताम् उपयेमे। तेन द्वादशवार्षिकं सत्रम् आरब्धम्। तदनुरोधात्। कठोरगर्भाम् अपि जानकीं विमुच्य गुरजनः तत्र यातः।

अन्वयार्थ

सूत्रधारः - वैदशिकः - विदेशवासी, अस्मि - हूँ, इति - अतः, पृच्छामि - जिज्ञासा करता हूँ।, कः - कौन, पुनः - फिर से, जायाता - कन्या शान्ता के पति।

नटः - राजा - महाराज, दशरथः - दशरथ, शान्तां नाम कन्यां - शान्ता नाम की कुमारी को, व्यजीजनत् - उत्पन्न किया, राज्ञे - महाराज के लिए, रोमपादाय - रोमपाद लिए, अपत्यकृतिकां - कृतिम कन्या रुप को, ताम् - उसको, शान्ताम् - शान्ता को, ददौ - दे दिया।

विभाण्ड सुतः - विभाण्डक मुनि के पुत्र, ऋष्यशृंग - इस नाम का एक ऋषि, ताम् - उसको, शान्ताम् - शान्ता को, उपयेमे - विवाह किया। तेन - उस ऋष्यशृंग मुनि द्वारा, द्वादशवार्षिकम् - बारह वर्षो को व्याप्त वाले, सत्रम् - यज्ञ, आरब्धम् - आरम्भ किया। तदनुरोधात् - उस मुनि के आग्रह के कारण, कठोर गर्भीम् - अपनी वधू जनकसुता पूर्ण गर्भा जानकी सीता को, विमुच्च - छोड़कर, गुरुजनः - पूज्यजन वशिष्ठ कौशल्यादि, तत्र - वहां श्रृंग के आश्रम में, गता -गये।

व्याख्या- सूत्रधार कहता है कि वह वैदेशिक है अर्थात् वह अयोध्यावासी नहीं है। अतः अयोध्या के विषये में उसका ज्ञान समीचीन नहीं हैं यह वह स्वीकार करता है। सूत्रधार जानता है। कि दशरथ की कोई भी पुत्री ही नहीं थी। अतः वह पूछता है- कौन महाराज दशरथ के जामाता है।

यहां नट राजा दशरथ की कन्या का परिचय देता है। वह कहता है कि राजा दशरथ के शान्ता नाम की एक कन्या थी। किन्तु जन्म के बाद ही राजा ने उस कन्या को अंगराज रोमपाद को दत्तक रुप में दे दिया। विभाण्डक मुनि के पुत्र महामुनि ऋष्यशृंग ने उसके साथ विवाह किया। उस मुनि ऋष्यशृंग ने बारह वर्षो तक चलने वाला एक यज्ञ का आरम्भ किया। अतः उस ऋषि के अनुरोध से गर्भिणी सीता को अयोध्या में स्थापित करके वसिष्ठ कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा आदि उस यज्ञ में गई।

व्याकरण विमर्श

1. **व्यजीजनत्** - विपूर्वकात् जन्-धातोः णिचि लुड्-लकारे प्रथमपुरुषैकवचने व्यजीजनत् इति रूपम्।
2. **अपत्यकृतिकाम्** - कृता एव कृतिका अपत्यं च सा कृतिका इति अपत्यकृतिका इति कर्मधारयसमासः, ताम् अपत्यकृतिकाम। विहितककृत्रिमकन्याम् इत्यर्थः।
3. **उपयेमे** - उपपूर्वकात् यम्धातोः लिटि प्रथमपुरुषैकवचने रूपम्।
4. **कठोरगर्भाम्** - कठोरः पूर्णः गर्भः यस्याः सा कठोरगर्भा, तां कठोरगर्भाम् इति बहुव्रीहिसमासः।

छन्दः- कन्यामिति श्लोक में अनुष्टुप् छनद है।

पाठगत प्रश्न 12.6

18. राजा दशरथ की कन्या का नाम क्या था?
19. राजा दशरथ ने कन्या किसे दे दी?
20. अपत्यकृतिकाम् का अर्थ क्या है?
21. किसने शान्ता से विवाह किया?
22. ऋष्यशृंग ने कैसा यज्ञ आरम्भ किया?

टिप्पणी

12.8 मूलपाठ

सूत्रधारः- तत्किमनेन? एहि राजद्वारमेव स्वजातिसमयेनोपनिष्ठावः।

नटः- तेन हि निरूपयतु राज्ञः सुपरिशुद्धामुपस्थानस्तोत्रपद्धतिं भावः।

सूत्रधारः - मारिष,

सर्वथा व्यवहर्तव्यं कुतोह्यवचनीयता।
यथा स्वीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः।।

अन्वयः

सूत्रधारः - तत् अनेन किम्। एहि स्वजातिसमयेन राजद्वारम् एवं उपतिष्ठावः।

नटः- तेन राज्ञः सुपरिशुद्धाम् उपस्थानस्तोत्रपद्धतिं निरूप्यतु।

सूत्रधारः - मारिष, सर्वथा व्यवहर्तव्यम् अवचनीयता कुतः? हि जनो यथा स्वीणां साधुत्वे दुर्जनः तथा वाचाम् (अति दुर्जनः)।

अन्वयार्थः

सूत्रधारः - तत् - तो, अनेन - उत्स्व के विराम के कारण के चिन्तन से, किम् - क्या सिद्ध होता है।, स्वजातिसमयेन - अपनी जाति चारण जाति के, स्वभाव से - आचरण से, राजद्वारम् - राजा के प्रतीहार के, उपतिष्ठावः - समीप जाते है।

नटः- तेन - राजद्वार पर स्तुति के पठनीयता से, निरुपयतु - चिन्तन कर, सुपरिशुद्धाम् - सदैव दोष शून्य को, उपस्थानस्तोत्र पद्धतिम् - राजा के समीप जाने के लिए स्तुतिपरिपाटी को, भावः - आप जाने।

सूत्रधारः - मारिष - आर्य, सर्वथा - सभी प्रकार से, व्यवहर्तव्यम् - व्यवहार करना चाहिए, अवचनीयता - निर्दोषता, कुतः - किस करणा से, हि - क्योकि, जनः - लोक, यथा - जिस प्रकार से, स्त्रीणाम - नारियों का, तथा - वैसे ही, तेनैव - उस प्रकार से, वाचाम् - वाणी का, साधुत्वे - सत्यता में, दुर्जनः - दोषदर्शी।

व्याख्याः -उसके बाद सूत्रधार नट से अपने कार्य को सम्पादित करने के लिए राजद्वार के प्रति प्रस्थापित किया। तब नट सूत्रधार को उद्देश्य करके कहता है कि राजद्वार में स्तुतिपाठ की आवश्यकता से दोष रहितों का राजोचित राजस्तुति पद्धति का आप विचार करो। तब सूत्रधार नट को उद्देश्य करके कहता है यह सर्वथा है। यहां सूत्रधार द्वारा लोक की निन्दा को कहा गया है। लोक में जन दोष रहित वस्तु में भी आयास से दोष की संभावना करते हैं। इस प्रकार वे जैसे साध्वी स्त्रियों के सतीत्व में सन्देह को प्रकट करते हैं। वैसे ही किसी कवि द्वारा लिखित काव्य में करते हैं। इस प्रकार दोषदर्शन उनके स्वभाव सिद्ध है। अतः उनके विषय में चिन्तन करके व्यवहार को नहीं त्यागना चाहिए। अतः सूत्रधार भी उन सब की चिन्ता किये बिना ही स्तुति करने के लिए राजद्वार में जायेंगे, ऐसा उसका आशय है। इस पद्य से कवि ने सीता

विषयक अपवाद की अवतारणा विहित की है।

विशेष टिप्पणी

इस श्लोक में सीता अपवाद की संभावना कही है। वह मुखसन्धि का समाधानाख्यभंग होता है। उसका लक्षण है-''बीजस्यागमन यत्तु तत्समाधानमुच्यते।''

व्याकरण विमर्श-

1. सर्वथा- सर्वशब्दात् थाल्प्रत्यये सर्वथा इति रूपम्। सर्वेण प्रकारेण इति तदर्थः।
2. व्यवहर्तव्यम्- वि-अव इत्युपसर्गद्वयपूर्वकात् हृधातोः तव्यत्प्रत्यये प्रथमैकवचने रूपम्।
3. अवचनीयता- वचनीयं दोषः। तस्य भावः इति तल्प्रत्यये वचनीयता। न वचनीयता अवचनीयता इति नंतत्पुरुषसमासः।

सन्धिविच्छेद-

1. कुतो ह्यवचनीयता - कुतः+हि+अवचनीयता।
2. दुर्जनो जनः - दुर्जनः+जनः

अलंकार विमर्श-

1. श्लोक कुतो ह्यावचनीयता' वाक्य को प्रति उत्तरार्ध वाक्यार्थ का हेतु होने के कारण से काव्यलिंग अलंकार है। उसका लक्षण है। ''हेतोर्वाक्यपदार्थत्वे काव्यलिंग निगद्यते।''
2. यथा स्त्रीणाम् तथा वाचाम् यहां उपमालंकार है। उसका लक्षण संहित्यदर्पण में -''

   साम्यं वाच्यमवैधर्मं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः।''
3. यहां उपमा का और काव्यलिंग अलंकार को अंग अंगीभाव होने से शंकरालंकार है।

   छन्द :- इस श्लोक में अनुष्टुप छन्द है।

पाठगत प्रश्न 12.7

23. अवचनीयता कहां नहीं है?
24. लोक कैसा होता है?

12.9 मूलपाठ

नट- अतिदुर्जन इति वक्तव्यम्।

टिप्पणी

देव्यामपि हि वैदेह्यां सापवादो यतो जनः।
रक्षोगृस्थितिर्मूलमग्रिशुद्धौ त्वनिश्यचः।।6।।

सूत्रधार - यदि पुनरियं किंवदन्ती महाराजं प्रति स्यन्देत ततः कष्टं स्यात्।

अन्वय

नटः -अतिदुर्जन इति वक्तव्यम्।

यतो हि जनः देव्यां वैदेह्याम् अमि सापवादः (वर्तते) रक्षोग्रहस्थितिः (तस्य) मूलम् (अस्ति)। अग्रिशुद्धौ तु (जनस्य) अलश्चयः।

सूत्रधारः - यदि पुनःइयं किंवदन्ती महाराजं प्रति राजानं स्यन्देत ततः तदा कष्टं स्यात्।

अन्वयार्थः-

नट- अतिदर्जन- सदैव दोष देखने वाले, वक्तव्यम् - कहना चाहिए। यतः - क्योंकि या जिस कारण से, जनः - लोक, देव्याम् - परम् पूज्य वैदेही जनकतनया सीता में, अपि - भी, सापवाद - दूसरों द्वारा निन्दा है। रक्षोगृहस्थितिः - रावण के द्वार में निवास करना मूल कारण है, अग्निशुद्धा - अग्नि परीक्षा में शुद्धि को तो लोगों का, अनिश्चयः - निर्णय अभाव में संशय है।

सूत्रधारः- यदि पुनः- चेत, इयम् - यह, किंवदन्ती - जनश्रुति, महाराज प्रति - राजा रामचन्द्र के प्रति, स्यन्देत् - प्रस्रव होती है तो, ततः- इसके बाद, कष्टः - कष्ट होगा।

व्याख्या- पूर्व में सूत्रधार ने लोक की निन्दा की। यहां नट भी लोक की दुष्टता अथवा अतिदुर्जनता को प्रकाशित करते हैं। देवी तथा वैदेही ये दोनों पद सीता के चरित्र के अलौकिक उत्कर्ष को ध्वनित करते हैं। सीता आत्मज्ञानी मनुष्य के गर्भ से अनुत्पन्न है और फिर भी वह वैदेही अर्थात् आत्मज्ञानी विदेहराज जनक की पुत्री है। वैसे ही राक्षस रावण के गृह में उसकी अवस्था के कारण से लोग उसके चरित्र में दोष देखते हैं। अग्नि परीक्षा होने पर भी उनका विश्वास नहीं है। अतः वे अतीव दुर्जन हैं, यह वक्तव्य है। कवि भवभूति ने लोग सीता चरित्र के निन्दक है, इस कथन से राम का सीता परित्याग करना उचित प्रस्तुत किया है। लोग सीता का रावण राज्य लंका में रहने के कारण से उसके दोष को प्रदर्शित करते हैं। सूत्रधार आशंका को प्रकट करता है कि यह जनश्रुति महाराज रामचन्द्र को पता चलेगी तब उन्हें महान कष्ट होगा।

व्याकरण विमर्श

1. **वैदेह्याम्**- विदेहस्य अपत्यं स्त्री इत्यर्थें विदेहशब्दात् अंप्रत्यये स्त्रियां डीपि सप्तम्याः एकवचने रूपम्।
2. **सापवादः**- अपवादेन लांछनेन सहितः सापवादः।
3. **रक्षोगृहस्थितिः** - रक्षसःगृहं रक्षोगृहम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। रक्षोगृहे स्थितिः रक्षोगृहस्थितिः इति सप्तमीतत्पुरुषसमासः।

4. **अग्निशुद्धौ** - अग्नौ शुद्धिः अग्निशुद्धिः इति सप्तमीतत्पुरुषसमासः।

5. **अनिश्चयः** - न निश्चयः अनिश्चयः इति नंतत्पुरुषसमासः।

अलंकार विमर्श

1. 'देव्यामपि' इस श्लोक में दोषभाव होने पर भी दोष कथन से विभावनालंकार है। उसका लक्षण

   ''विभावना विना हेतु कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते।''

2. अशुद्धि सत्य में भी अविश्वास के कारण विशेषोक्ति अलंकार है। उसका लक्षण''

   सति हेतौ फलाभावो विशेषोक्ति''

3. 'अतिदुर्जन' इस वक्तव्यम् इस काव्य के प्रति पूर्ववाक्य का हेतु होने से काव्यलिंग अलंकार है।

   छन्द- देव्यामपि इस श्लोक में अनुष्टुप छन्द है।

पाठगतप्रश्न 12.8

25. सीता के अपवाद का क्या कारण है?

26. रक्षोगृहस्थितिर्मूलमग्निशुद्धौ' का सन्धिविच्छेद कीजिए?

27. लोक कहां विश्वास नहीं करते?

12.10 मूलपाठ

नटः- सर्वथा ऋषयो देवाश्च श्रेयो विधास्यन्ति। (परिक्रम्य) भो भो क्वेदानीं महाराजः?

(आकर्ण्य) एवं जनाः कथयन्ति -

स्नेहात्सभाजयितुमेत्य दिनान्यमूनि नीत्वोत्सवेन जनकोऽद्य गतो विदेहान्।
देव्यास्ततो विमनसः परिसान्त्वनाय धर्मासनाद्विशति वासगृहं नरेन्द्रः ।।7।।

अन्वय

नटः- सर्वथा ऋषयः देवाः च श्रेयः विधास्यन्ति। परिक्रम्य भो भो क्व इदानीं महाराजः? आकर्ण्य जनाः कथयन्ति - स्नेहात् सभाजयितुम् एत्य अमूनि दिनानि उत्सवेन नीत्वा जनकोऽद्य विदेहान् गतः। ततः विमनसः देव्याः परिसान्त्वनाय नरेन्द्रः धर्मासनात् वासगृहं विशति।

टिप्पणी

अन्वयार्थ

नटः- सर्वथा - सब प्रकार से, ऋषयः - वशिष्ठ वाल्मीकि प्रमुख ऋषि, देवाः -गंगा पृथिवी आदि देवता, च - और, श्रेयः - कल्याण को, विधास्यन्ति - करेंगे। (परिक्रम्य - भ्रमण करके) भो भो - अरे अरे, क्व इदानीम् महाराजः - इस समय कहां है। आकर्ण्यम् - सुनकर, एवम् - इस प्रकार, जना - लोग, कथयन्ति - कहति है।, स्नेहात् - अति प्रेम से, सभाजवितुम् - रामचन्द्र का अभिनन्दन करने के लिए, एत्य - अयोध्या आकर, अमुनि दिनानि - इन दिनों, उत्सवेन - महल के राज्याभिषेक उत्सव से, नीत्वा - विताकर (व्यतीत करके) जनकः - विदेहपति, अद्यः - आज, विदेहन् - अपने जनपद जनकपुरी को, गतः - चले गये। ततः - उस कारण पिता के गमन करने से, विमनसः - खिन्नता से, देव्याः - सीता को, परिसान्त्वनाय - मनोविनोद के लिए, नरेन्द्रः - महाराजरामचन्द्र, धर्मासनात् - धर्मसिंहासन से उठकर, वासगृहम् - सीतानिवासस्थान को, विशति - प्रवेश करता है।

व्याख्या- इसके बाद नट सूत्रधार को कहता है कि देवता और ऋषि सदैव मंगल ही करते हैं। अतः चिन्ता नहीं करनी चाहिए। इसके बाद नट लगातार चारों ओर देखकर महाराज श्रीरामचन्द्र इस समय कहां है। यह पूछता है उसके बाद वह कहता है कि दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र के राज्याभिषेक के उपलक्ष्य में न केवल ऋषि अपितु राजर्षि भी आये थे। अतः राजर्षि जनक भी उत्सव में यहां आये थे। वे श्रीराम के श्वसुर भी हैं। उत्सव की समाप्ति के बाद वे आज अपने राज्य विदेह लौट गये हैं। उनके जाने के बाद जनक पुत्री राम की पत्नी सीता खिन्न हो गई। अतः उसकी खिन्नता दूर करने के लिए राम धर्मसिंहासन से उठकर वासगृह की ओर गये। यहाँ धर्मासनात् और नरेन्द्र में दो पद राम के चरित्र की विशिष्टता प्रदर्शित करते हैं। राम धर्मपालन में स्थिर मति वाले थे। अतः वे पहले नरेन्द्र और बाद में सीतापति थे। भविष्य की घटना चक्र का इन दोनों पदों से बोधित हो रहा है। इस प्रकार नाटक की प्रस्तावना समाप्त होती है।

विशेष टिप्पणी- इस प्रकार उत्तररामचरित की प्रस्तावना प्रस्तुत की गई। प्रस्तावना का लक्षण साहित्यदर्पण में:-

''नटी विदूषको वापि पारिपार्श्विक एव वा।
सूत्रधारेण सहिताः संलापं यत्र कुर्वते।।
चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः।
आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनापि वा।''

यहाँ प्रयोगातिशय प्रस्तावना है-उसका लक्षण साहित्यदर्पण में

यदि प्रयोग एकस्मिन् प्रयोगोऽन्य प्रयुज्यते।
तेन पात्रप्रवेशश्चेत् प्रयोगातिशय स्तदा।।''

व्याकरणविर्मश

1. एत्य - आङ्-पूर्वकात् इण्धातोः क्त्वाप्रत्यये तस्य ल्यबादेशे एत्य इति रूपम्।
2. विमनसः - विगतं मनः यस्याः सा विमनाः तस्याः विमनसः इति प्रादिसमासः।

सन्धिविच्छेद,

1. दिनान्यमूनि - दिनानि+अमूनि।
2. नीत्वोत्सवेन - नीत्वा+उत्सवेन।
3. जनकोऽद्य - जनकः+अद्य।
4. गतो विदेहान् - गतः+विदेहान्।
5. देव्यास्ततो विमनसः - देव्याः+ततः+विमनसः।
6. धर्मासनाद्विशति - धर्मासनात्+विशति।

छन्द- स्नेहादिति - 'वसन्ततिलका वृत्तम' छन्द है इसका लक्षण वृत्तरत्नाकर में -

''ज्ञेया वसन्ततिलका तभजा जगौ गः''

पाठगत प्रश्न 12.9

28. सीता की खिन्नता का क्या कारण था?
29. राम सिंहासन से उठकर कैसे वासगृह जाते हैं?
30. वसन्ततिलका छन्द का लक्षण लिखिए?

पाठसार

ग्रन्थ की समाप्ति की कामना से मंगलाचरण करना चाहिए। इस श्रुति को मन में करके कवि ने नाटक के आदि में पूर्व आचार्यों व्यास वाल्मीकि आदि को स्मरण किया है। उनके स्मरण से वाक्देवी सरस्वती का लाभ, कवि को इष्ट है। नाट्यशास्त्र में इस को नान्दी कहा जाता है। नान्दीपाठ के बाद में सूत्रधार नाट्यकार कवि भवभूति की संज्ञा वंश आदि का परिचय देता है। तब यह भी सूचित करता है कि राज्याभिषेक के उपलक्ष में अयोध्या में आये अतिथि सभी अपने प्रदेश को लौट गये है। महाराज दशरथ के शान्ता नाम की एक कन्या थी जिसको जन्म के समय में एक दत्तकरुप से अंगराजा रोमपाद को दे दिया। उसके पति महर्षि ऋष्यश्रृंग ने बारह वर्ष तक चलने वाले एक महायज्ञ का आरम्भ किया। अतः उसके अनुरोध से राम की जननी कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा पूर्णगर्भा सीता को अयोध्या में छोड़कर वशिष्ठ की पत्नी अरुन्धती को आगे करके जामाता के आश्रम में गयी। इस प्रसंग में सूत्रधार सीता विषयक लोकापवाद को प्रकट करता है तथा नट भी सीता की अग्निशुद्धि में लोग विश्वास नहीं करते है, यह कहता है। सूत्रधार आशंका करता है कि यदि रामचन्द्र यह सब जानेंगे तो महान अनिष्ट होगा। उसको सुनकर नट विश्वास प्रकट करता है कि देवता सदैव लोगों के कल्याण ही सिद्ध करते है। इसके बाद पिता जनक के अयोध्या से जाने के कारण से सीता खिन्न हो जाती है। अतः उसको

टिप्पणी

सान्त्वना देने के लिए श्रीराम सिहांसन से उठकर वासगृह की ओर जाते हैं। इस प्रकार की प्रस्तावना समाप्त होती हैं।

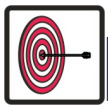

आपने क्या सीखा

- श्रीराम और सीता के चरित्र को जाना।
- नट, नाटक एवं सूत्रधार को जाना।
- नान्दी पाठ को जाना।
- छन्द एवं उनके लक्षणों को जाना।

पाठान्तरप्रश्न

1. नान्दी किसे कहते हैं- नान्दी का लक्षण उसकी समालोचना कीजिए।
2. सूत्रधार कौन होता है?
3. भवभूति कौन थे उनके विषय में लिखिए।
4. मंगल श्लोक की व्याख्या कीजिए।
5. अयोध्या में गीतावाद्य आदि के अभाव का क्या कारण था?
6. सम्पूर्ण उत्तररामचरित नाटक को रामायण के किस भाग से कहां तक कथा व्याप्त है। उसका वर्णन कीजिए।
7. एक श्लोक जिसमें अनुष्टुप छन्द है, उसका लक्षण से समन्वय कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1

1. कवि भगवान् के अंशरूपा वाक्देवी सरस्वती की इच्छा करता है।
2. अनुष्टुप का लक्षण -श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पचंमम्।
   द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययो:।।
3. वच् धातु से क्विप् प्रत्यय से वाक् बनता है, उसका अर्थ वचन है। नम: वाक् यस्मिन् इति नमोवाक: बहुव्रीहिसमास: तं नमोवाकम्।

12.2

4. आर्यों के सर्वविभूतसमपन्न महादेव के उत्सव में सूत्रधार को ज्ञात होता है।

5. भवभूति काश्यप, श्रीकण्ठपदलांछन, पदवाक्य प्रमाणज्ञ, जातूकर्णी के पुत्र थे।

6. पदं च वाक्यं च प्रमाणं च पदवाक्यप्रमाणानि - इतरेत्तरद्वन्द्वसमास तेषां ज्ञः पदवाक्यप्रमाण ज्ञः।

12.3

7. उत्तररामचरित।

8. वाक्+वश्या+इव+अनुवर्तते।

9. यह नाटक भवभूति विरचित है।

10. ग्रन्थकर्ता को सरस्वती देवी वश्या स्त्री के समान अनुकरण करती है यह ग्रन्थकर्ता का वैशिष्ट्य है।

12.4

11. राम के सुहृद वानर राक्षस वशिष्ठादि ब्रह्मर्षि और जनकादि राजर्षि राम राज्याभिषेक में आये।

12. अभिषेक में राम का अभिनन्दन करने के लिए अयोध्या आये।

13. राज्याभिषेक के उत्सव की समाप्ति पर दशरथ की रानियाँ अयोध्या को छोड़कर यज्ञ के लिए ऋष्यश्रृंगमुनि के आश्रम को गई, इस कारण निःशब्दता थी।

14. अभिषेकस्य समय - षष्ठीतत्पुरुष।

15. सूत्रधार आयोध्यकः हो गये।

12.5

16. राम की माता ऋष्यश्रृंग मुनि के अनुरोध से यज्ञ देखने के लिए उसके आश्रम को गई।

17. वशिष्ठ पत्नी अरुंधती को आगे करके राम की माताएं गई।

12.6

18. दशरथ की कन्या का नाम शान्ता था।

19. दशरथ की कन्या को अंगराज रोमपाद को दे दी।

20. अपत्यकृतिकाम् का अर्थ विहितकृत्रिमकन्या है।

21. विभाण्डक सुत ऋष्यश्रृंग ने शान्ता से विवाह किया।

22. ऋष्यश्रृंग बारह वर्ष तक चलने वाले यज्ञ का आरम्भ किया।

टिप्पणी

12.7

23. सर्वथा व्यवहार करना चाहिए, अतः अवचनीयता नहीं होती है।

24. लोक स्त्रियों और वाणी की साधुता में भी दोष देखते है।

12.8

25. सीता के अपवाद का कारण राक्षण रावण के घर में निवास था।

26. रक्षोगृहस्थितिः + मूलम्।

27. लोक अग्निशुद्धि में विश्वास नहीं करते।

12.9

28. सीता की खिन्नता का अपने पिता जनकादि का विदेहराज्य में गमन ही कारण है।

29. राम सिंहासन से उठकर सीता के मनोरंजन के लिए वासगृह में गये।

30. वसन्ततिलका का लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तमजा जगौ गः।